B.ed 1st year, Paper-C2
Unit-2

विद्यालय

विद्यालय का अर्थ —

शाब्दिक अर्थ – विद्यालय दो शब्दों के योग से बना है।

विद्या + आलय = विद्यालय

विद्यालय से तात्पर्य इस प्रकार के स्थल से है जहाँ पर विद्या प्रदान की जाती है। अंग्रेजी में विद्यालय के लिए 'स्कूल' 'School' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'SKhola' और 'SKhole' से हुई है। इसका तात्पर्य 'अवकाश' होता है। अवकाश इसलिए बोला जाता है कि प्राचीन यूनान में अवकाश के स्थानों को ही विद्यालय के नाम से संबोधित किया जाता था। अवकाश काल को ही आत्म - विकास समझा जाता था जिसका अभ्यास अवकाश नामक निश्चित स्थान पर किया जाता था धीरे- धीरे यही अवकाश स्थल एक निश्चित उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम को ज्ञान प्रदान करने वाली संस्थाएँ अर्थात स्कूल बन गए।

Teacher's Signature.....

परिभाषा :- जे० एस० रॉस के अनुसार -

"विद्यालय वे संस्थायें है जिनको सभ्य - मानव ने इस दृष्टि से स्थापित किया है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिले।"

जॉन डी वी के अनुसार -

"विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास की दृष्टि से उसे विशिष्ट क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा दी जाती है।

व्यापक अर्थ ⟹

सामान्य रूप से विद्यालयों को सूचना विकेताओं के रूप में माना जाता है, इस अवधारणा का स्पष्टीकरण प्रेस्टालॉजी ने इस प्रकार किया है।

"ये विद्यालय, अमनोवैज्ञानिक है जो बालक को उसके स्वभाविक जीवन से दूर कर देते है उनकी स्वतंत्रता को निरकुंशता से रोक देते

रोक देते हैं, और उसे अनावश्यक बातों को याद रखने के लिए भेड़ों के समान हाँकते हैं और घण्टों, दिनों, सप्ताहों, महीनों तथा वर्षों तक दर्दनाक जंजीरों से बांध देते हैं।"

अपने व्यापक अर्थ में विद्यालय समाज का लघु रूप है, सद्भावना, प्रेम तथा विश्वशांति का केन्द्र है।

एस० बाल कृष्ण जोशी के विचार में -

"विद्यालय ईंट और गारे से बनी हुई ईमारत नहीं है, जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र एवं शिक्षक होते हैं। विद्यालय बाजार नहीं है जहाँ विभिन्न योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों को दान बेचा जाता है। विद्यालय रेलवे प्लेटफार्म नहीं है जहाँ विभिन्न उद्देश्यों से व्यक्तियों की भीड़ जमा होती है विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है, जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व है। विद्यालय गतिशील समुदायी केन्द्र है, जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक आश्चर्य-जनक भवन है, जिसका आधार

Teacher's Signature.....

सद्भावना है। जनता की सद्भावना, माता-पिता की सद्भावना सारांश में एक सुसंचालित विद्यालय एक सुखी परिवार, एक पवित्र मंदिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु रूप में एक राज्य और मनमोहक वृन्दावन है, इसमें इन सब बातों का मिश्रण होता है।"

विद्यालय की आवश्यकता :-

सभ्यता के आदि काल में परिवार समुदाय और धार्मिक संस्थाएँ ही शिक्षा की मुख्य संस्थाएँ थी। परन्तु जैसे-जैसे मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विकास किया, वैसे-वैसे उसे उस सब ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखने और उससे आगे बढ़ाने वाली पीढ़ी को अवगत कराने के लिए विद्यालयों का निर्माण करना पड़ा।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विकास के साथ-साथ इस युग में जनसंख्या में भारी विस्फोट हुआ है। इस तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की शिक्षा की व्यवस्था परिवार, समुदाय और धार्मिक संस्थाओं के द्वारा नही की जा सकती। अतः इस

इन्हीं से ही आज विद्यालयों की बड़ी आवश्यकता एवं उनका बहुत बड़ा महत्व है।